छन्द

छन्द

पद्य लिखते समय वर्णों की एक निश्चित व्यवस्था रखनी पड़ती है। यह व्यवस्था छन्द या वृत्त कहलाती है।

वृत्त के भेद

प्रायः प्रत्येक पद्य के चार भाग होते हैं, जो पाद या चरण कहलाते हैं। जिस वृत्त के चारों चरणों में बराबर वर्ण हों, वे समवृत्त कहलाते हैं। जिसके प्रथम और तृतीय तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण वर्णों की दृष्टि से समान हों, वे अर्धसमवृत्त हैं। जिसके चारों चरणों में वर्णों की संख्या समान न हो, वे विषमवृत्त कहे जाते हैं।

गुरु लघु व्यवस्था

छन्द की व्यवस्था वर्णों पर आधारित रहती है, मुख्यतः स्वर वर्ण पर। ये वर्ण छन्द की दृष्टि से दो प्रकार के होते हैं– लघु और गुरु। सामान्यतः ह्रस्व स्वर लघु होता है और दीर्घ स्वर गुरु। किन्तु कुछ परिस्थितियों में ह्रस्व स्वर लघु न होकर गुरु माना जाता है। छन्द में गुरु–लघु व्यवस्था का नियम इस प्रकार है– अनुस्वारयुक्त, दीर्घ, विसर्गयुक्त, संयुक्तवर्ण के पूर्व का वर्ण गुरु होता है। शेष सभी वर्ण लघु होते हैं। छन्द के किसी पाद का अंतिम वर्ण लघु होने पर भी आवश्यकतानुसार गुरु मान लिया जाता है।

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।
वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि च॥

गुरु एवं लघु के लिए अधोलिखित चिह्न प्रयुक्त होते हैं–

गुरु – ऽ

लघु – ।

यति व्यवस्था

छन्द में जिस–जिस स्थान पर किञ्चिद् विराम होता है, उसको 'यति' कहते हैं। विच्छेद, विराम, विरति आदि इसके नामान्तर हैं।

यतिर्जिह्वेष्टविश्रामस्थानं कविभिरुच्यते।
सा विच्छेदविरामाद्यैः पदैर्वाच्या निजेच्छया।।

गण व्यवस्था

आदिमध्यावसानेषु भजसा यान्ति गौरवम्।
यरता लाघवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम्।।

तीन वर्णों का एक गण माना जाता है। गुरु–लघु के क्रम से गण आठ प्रकार के होते हैं।

भगण	–	ऽ।।	**जगण**	–	।ऽ।
सगण	–	।।ऽ	**यगण**	–	।ऽऽ
रगण	–	ऽ।ऽ	**तगण**	–	ऽऽ।
मगण	–	ऽऽऽ	**नगण**	–	।।।

क. वैदिक छन्द

वैदिक मन्त्रों में गेयता का समावेश करने के लिए जिन छन्दों का प्रयोग हुआ है उनमें गायत्री, अनुष्टुप् तथा त्रिष्टुप् प्रमुख हैं।

गायत्री लक्षण : जिस छन्द के तीन चरण हों, प्रत्येक चरण में आठ वर्ण हों वह गायत्री छन्द होता है। इसका पाँचवाँ वर्ण लघु तथा छठा वर्ण गुरु होता है। उदाहरण–

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धिया वसुः।।

(*यजुर्वेदः –40/1*)

अनुष्टुप् लक्षण : अनुष्टुप् छन्द में चार चरण होते हैं, प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं।

सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ।।

त्रिष्टुप् लक्षण : जिस छन्द के चार चरण हों और प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर हों वह त्रिष्टुप् छन्द होता है। उदाहारण–

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि॥

(*ऋग्वेदः 10/192/3*)

ख. लौकिक छन्द

प्रस्तुत पुस्तक के पाठों में अनेक लौकिक छन्दों को भी संकलित किया गया है। अतः संकलित श्लोकों के छन्दों के लक्षण तथा उदाहरण प्रस्तुत हैं–

1. **अनुष्टुप् लक्षण–आठ वर्णों वाला समवृत्त**
अनुष्टुप् छन्द के सभी चारों चरणों का पाँचवाँ वर्ण लघु, छठा वर्ण गुरु तथा प्रथम एवं तृतीय चरण का सातवाँ वर्ण गुरु और द्वितीय एवं चतुर्थ चरण का सातवाँ वर्ण लघु होता है। इसे श्लोकछन्द भी कहते है। उदाहरण–

पतितैः पतमानैश्च, पादपस्थैश्च मारुतः।
कुसुमैः पश्य सौमित्रे! क्रीडन्निव समन्ततः॥

(*रामायणम्*)

2. **इन्द्रवज्रा लक्षण– (ग्यारह वर्णों वाला समवृत्त)**
जिस छन्द के प्रत्येक पाद में दो तगण, एक जगण और दो गुरु वर्ण क्रम से हों वह इन्द्रवज्रा छन्द होता है।
स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।
उदाहरण–

हंसो यथा राजतपञ्जरस्थः, सिंहो यथा मन्दरकन्दरस्थः।
वीरो यथा गर्वितकुञ्जरस्थश्चन्द्रोऽपि बभ्राज तथाम्बरस्थः॥

(*रामायणम्*)

3. **उपेन्द्रवज्रा लक्षण– (ग्यारह वर्णों का समवृत्त)**
जिस छन्द के प्रत्येक पाद में क्रमशः एक जगण, एक तगण, एक जगण और दो गुरु वर्ण हों वह उपेन्द्रवज्रा छन्द होता है।

उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ। उदाहरण–

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव-देव।

4. उपजाति लक्षण– (ग्यारह वर्णों वाला समवृत्त)

जिस छन्द में इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा के चरणों का मिश्रण होता है वह उपजाति छन्द होता है।

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु वदन्ति जातिष्विदमेव नाम ॥

इस छन्द का प्रथम तथा तृतीय चरण उपेन्द्रवज्रा छन्दानुसार तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण इन्द्रवज्रानुसार हैं। अतः इसे उपजाति छन्द कहा जा सकता है।

उदाहरण–

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा, (*इन्द्रवज्रा*)
हिमालयो नाम नगाधिराजः। (*उपेन्द्रवज्रा*)
पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य,
स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः॥ (*कुमारसम्भवम्*)

5. मालिनी लक्षण– (पन्द्रह वर्णों वाला समवृत्त)

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः दो नगण, एक मगण तथा दो यगण हों वह मालिनी छन्द होता है। इसके प्रत्येक चरण में आठवें तथा तदनन्तर सातवें अर्थात् चरण के अन्तिम वर्ण पन्द्रहवें वर्ण के बाद यति (विराम) होती है। **ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।**

उदाहरण–

मम हि पितृभिरस्य प्रस्तुतो ज्ञातिभेद-
स्तदिह मयि तु दोषो वक्तृभिः पातनीयः।
अथ च मम स पुत्रः पाण्डवानां तु पश्चात्
सति च कुलविरोधे नापराध्यन्ति बालाः॥ (*पञ्चरात्रम्*)

अलङ्कार

लोक में जिस प्रकार आभूषण शरीर की शोभा बढ़ाने में सहायक होते हैं उसी प्रकार काव्य में उपमादि अलंकार उसकी चारुता की अभिवृद्धि करते हैं। वस्तुतः काव्य के शोभाधायक तत्व को ही अलंकार कहते हैं।

शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभातिशयिनः।
रसादीनुपकुर्वन्तोऽलङ्कारास्तेऽङ्गदादिवत्॥

शब्द तथा अर्थ को काव्य का शरीर कहा गया है। अतः काव्य–शरीर का अलंकरण भी शब्द तथा अर्थ दोनों रूपों में होता है। जो अलंकार शब्दों के द्वारा काव्य में चारुता की अभिवृद्धि करते हैं वे शब्दालंकार कहे जाते हैं जैसे अनुप्रास, यमक आदि। जो अलंकार अर्थ के द्वारा काव्य की चारुता की अभिवृद्धि करते हैं वे अर्थालंकार कहे जाते हैं, जैसे उपमा, रूपक आदि। इन दोनों प्रकार के अलंकारों का प्रस्तुत संकलन के पाठों में प्रयोग हुआ है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं–

अनुप्रासः

वर्णसाम्यमनुप्रासः। (*काव्यप्रकाशः*)

समान वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास अलंकार कहा जाता है।

उदाहरण –

वहन्ति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति ध्यायन्ति नृत्यन्ति समाश्वसन्ति।
नद्यो घना मत्तगजा वनान्ताः प्रियाविहीनाः शिखिनः प्लवंगाः॥

(*रामायणम्*)

इस श्लोक में आए हुए वहन्ति, वर्षन्ति, नदन्ति, भान्ति, ध्यायन्ति, नृत्यन्ति तथा समाश्वसन्ति इन शब्दों में अनेक वर्णों की समान आवृत्ति है जो श्लोक की चारुता की अभिवृद्धि में सहायक है। अतः यहाँ पर **अनुप्रास** अलंकार है।

यमकः

सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते॥ (*साहित्यदर्पणम्*)

जब वर्ण समूह की उसी क्रम से पुनरावृत्ति की जाए किंतु आवृत्त वर्ण समुदाय या तो भिन्नार्थक हो या अंशतः अथवा पूर्णतः निरर्थक हो तो यमक अलंकार कहलाता है। उदाहरण–

प्रकृत्या हिमकोशाढ्यो दूरसूर्यश्च साम्प्रतम्।
यथार्थनामा सुव्यक्तं हिमवान् हिमवान् गिरिः॥

इस श्लोक में हिमवान् शब्द की आवृत्ति हुई है और दोनों पद भिन्नार्थक हैं। अतः यहाँ पर प्रयुक्त अंलकार यमक है जो श्लोक के सौंदर्य की अभिवृद्धि में सहायक है।

उपमा

साधर्म्यमुपमा भेदे। (*काव्यप्रकाशः, 10, 87*)

दो वस्तुओं में, भेद रहने पर भी, जब उनकी समानता प्रतिपादित की जाती है तो वहाँ उपमा अलंकार होता है। उदाहरण–

रविसंक्रान्तसौभाग्यस्तुषारारुणमण्डलः।
निःश्वासान्ध इवादर्शश्चन्द्रमा न प्रकाशते॥ (*रामायणम्*)

यहाँ पर सूर्य के प्रकाश से मलिन चन्द्रमा की उपमा निःश्वासों से मलिन आदर्श (दर्पण) से दी गई है। यह उपमा श्लोक के अर्थ की चारुता की वृद्धि में सहायक है।

उपमा में चार तत्त्व होते हैं

1. उपमेय – जिसकी समानता बताई जाए
2. उपमान – जिससे समानता बताई जाए
3. साधारण धर्म – उक्त दोनों में समान गुण
4. वाचक शब्द – समानता प्रकट करने वाले शब्द– इव यथा आदि।

रूपकम्

तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः। (*काव्यप्रकाशः, 10,93*)

अतिशय सादृश्य के कारण जहाँ उपमेय को उपमान का रूप दे दिया जाये अथवा उपमेय पर उपमान का आरोप कर दिया जाये वहाँ रूपक अलंकार होता है। उदाहरण–

अनलंकृतशरीरोऽपि चन्द्रमुख आनन्दयति मम हृदयम्।

सौवर्णशकटिका पाठ के इस वाक्य में प्रयुक्त चन्द्रमुख शब्द में रूपक अलंकार है। यहाँ पर मुख पर चन्द्रमा का आरोप होने से रूपक अलंकार है।

उत्प्रेक्षा

''भवेत् सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।।

(*साहित्यदर्पणम्*)

पर (उपमान) के द्वारा प्रकृत (उपमेय) की सम्भावना (उत्कट सन्देह) को उत्प्रेक्षा अलंकार कहते हैं।

उदाहरण–

पतितैः पतमानैश्च पादपस्थैश्च मारुतः।
कुसुमैः पश्य सौमित्रे! क्रीडन्निव समन्ततः।। (*रामायणम्*)

यहां पर वायु के द्वारा पुष्पों के साथ की जाने वाली क्रीडा की सम्भावना में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

अर्थान्तरन्यासः
भवेदर्थान्तरन्यासोऽनुषक्तार्थान्तराभिधा।

(*चन्द्रालोकः, 5.66*)

मुख्य अर्थ का समर्थन करने वाले अर्थान्तर (दूसरे वाक्यार्थ) का प्रतिपादन (न्यास) अर्थान्तरन्यास कहलाता है। उदाहरण–

यः स्वभावो हि यस्यास्ति स नित्यं दुरतिक्रमः।
श्वा यदि क्रियते राजा तत्किं नाश्नात्युपानहम्।।

यहाँ पर पूर्वार्द्ध के वाक्यार्थ का समर्थन उत्तरार्द्ध के वाक्यार्थ द्वारा किया गया है। अतः यहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

अतिशयोक्तिः

सिद्धत्वेऽध्यवसायस्यातिशयोक्तिर्निगद्यते।

(*साहित्यदर्पणम्, 10.46*)

अध्यवसाय के सिद्ध उपमेय के लिए केवल उपमान का ही कथन होने पर अतिशयोक्ति अलंकार होता है। अध्यवसाय का तात्पर्य है– उपमेय के निगरण के साथ उपमान से अभेद का आरोप अर्थात् उपमेय तथा उपमान में अभेद की स्थापना ।

उदाहरण–

यूथेऽपयाते हस्तिग्रहणोद्यतेन केन कलभो गृहीतः।

यहाँ पर अर्जुन को हस्ती तथा अभिमन्यु को कलभ (हाथी का बच्चा) के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार उपमेय अर्जुन व अभिमन्यु का निगरण कर उन्हें उपमान हस्ती तथा कलभ के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अतः यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है।

अनुशंसित ग्रन्थ

क्र.सं.	ग्रन्थनाम	लेखक	सम्पादक/प्रकाशक
1.	**ऋग्वेद**		सं प्र. एन. एस. सोनटक्के, वैदिक संशोधन मण्डल, पूना – 2, 1946
2.	**यजुर्वेद**	उव्वटमहीधरभाष्य	चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 1912
3.	**अथर्ववेद**		सातवलेकर, पारडी, 1957
4.	**रामायण**	वाल्मीकि	चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 1977
5.	**महाभारतम्**	व्यास	भण्डारकर प्राच्यविद्यासंशोधन संस्थानम् पुण्यपत्तनम् (पूना) 1975
6.	**जातकमाला**	आर्यशूर	सूर्यनारायण चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1971
7.	**मृच्छकटिकम्**	शूद्रक	निर्णयसागर प्रेस, मुम्बई
8.	**मृच्छकटिक**	शूद्रक	मोहन राकेश (हिन्दी अनुवादक) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1962
9.	**चरकसंहिता**	चरक	चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1984
10.	**भवानी भारती**	अरविन्द	अरविन्दाश्रम, पाण्डिचेरी
11.	**पुरुषपरीक्षा**	विद्यापति	खेमराज श्रीकृष्णदास, मुम्बई
12.	**सत्यशोधनम्**	पं. होसकेरे नागप्पशास्त्री	गाँधी स्मारक निधि, नई दिल्ली (भारतीय विद्या भवन, मुम्बई, 1965)
13.	**रूपरुद्रीयम्**	प्रो. राजेन्द्र मिश्र	वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद
14.	**तदेव गगनं सैवधरा**	प्रो. श्रीनिवास रथ	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्, नई दिल्ली

15.	**गीताञ्जलि** (संस्कृतानुवाद)		को.ल. व्यासराय शास्त्री
16.	**Sanskrit Drama in its Origin, Development and Theory**	A.B.Keith	Oxford Press, London, 1924
17.	**संस्कृत नाटक**	ए.बी.कीथ	उदय भानु सिंह (हिन्दी अनुवाद), मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली,
18.	**संस्कृत साहित्य का इतिहास**	बलदेव उपाध्याय	शारदा मन्दिर, वाराणसी, 1973
19.	**वैदिक साहित्य और संस्कृति**	बलदेव उपाध्याय	शारदा मंदिर, वाराणसी, 1973
20.	**History of Classical Sanskrit Literature**	M.Krishnamacharya	Moti Lal Banarsidas, Delhi
21.	**A History of Sanskrit Literature**	A.A. Macdonell	Moti Lal Banarsidas, Delhi 1962
22.	**संस्कृत साहित्य का इतिहास**	वाचस्पति गैरोला	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1978
23.	**संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास**	राधावल्लभ त्रिपाठी	विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी, 2001
24.	**संस्कृत और राष्ट्र की एकता**		राधावल्लभ त्रिपाठी, अक्षयवट प्रकाशन बलरामपुर हाऊस इलाहाबाद, 1991
25.	**संस्कृत रवीन्द्रम्**		वी. राघवन्, साहित्य अकादमी, रवीन्द्रभवन, नई दिल्ली, 1966